श्री गोकुलेशो जयति ।

कबिमण्डल

की

समस्यापूर्त्ति ।

मिती माघ सु० ८ बार बुध सम्बत १९५३

तेरहवां अधिबेसन ।

पाचो बान झरिगे ।

बाबू रामकृष्णबर्म्मा संपादक भारतजीवन काशी ।

बड़े बड़े बीरन को बिकल बिहाल करै बिश्वामित्र जैसे जाके मोह-पास परिगे । जाके मान-गंजन प्रभंजन प्रभाव आगे बज्रधारी बासव के गौरव उखरिगे ॥ जौन मीनकेतु जू के चोखे चारु चोपभरे चोजवारे बान चन्दभाल चित्त अरिगे । पैनी धार पेखि मृगनैनी के बिलोचन की बीर पंचबान जू के पाँचो बान झरिगे ॥ १ ॥

काशीनिवासी पण्डित द्विज बेनी कवि जी ।

आयो रितुराज पै न आयो वृजराज काहे